चारा बैंक प्रबंधन एवं साइलेज़ (Silage) बनाने की बिधि तथा भंडारण विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्ट

Report of One Day Training Program on Fodder Bank Management, Silage Making and Storage

भा.वा.अ.शि.प. - हिमालय वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने प्रदर्शन गाँव के पशुपालकों एवेम किसानों के लिए "चारा बैंक प्रबंधन एवं साइलेज़ (Silage) बनाने की बिधि तथा भंडारण पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन बड़ागाँव, शिमला में 04 अकतूबर, 2024 को किया। जिसका प्रमुख उद्देश्य किसानों एवं पशुपालकों को चारा बैंक प्रबंधन का महत्त्व व साइलेज बनाने की प्रक्रिया के बारे में अवगत कराना था। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ० संदीप शर्मा, निदेशक द्वारा की गई। उन्होने कहा कि हिमालय क्षेत्रों में चारा अभाव अवधि अथवा सर्दियों के मौसम में हरे चारे की आपूर्ति करना संभव नहीं होता, इस कमी को पूरा करने के लिए हरे चारे से साईलेज (हरा चारा घास चारा) बनाया जा सकता है और दुधारों पशुओं को सर्दियों मे जब हर चारा उपलब्ध नहीं होता उस समय इसे खिलाया जा सकता है। डॉ॰ जदीश सिंह वैज्ञानिक ने बताया कि प्रशिक्षण का उद्देश्य किसानों एवं पशुपालकों को चारा बैंक का महत्त्व व साइलेज बनाने की प्रक्रिया के बारे में व्यवहारिक अवगत कराना था उन्होने आगे कहा कि संस्थान ने इस वर्ष बड़ा गाँव के नजदीक व्युल, कचनार, खिड़क एवं बान प्रजातियों के लगभग 800 पौधे रोपित कर चारा बैंक स्थापित किया है । जिससे भविष्य मे प्रदर्शन गाँव बड़ गाँव के ग्रामीणों पशुओं के लिए चारा उपलब्ध होगा। इसके अलावा उन्होंने ग्रामीणों को मिशन लाईफ के अंतर्गत स्वच्छता के महत्व के बारे में लोगों को जागरूक किया। उन्होंने मानव और वाइल्ड लाइफ़ संघर्ष के बारे में लोगों को जानकारी दी। उन्होंने पारिस्थितिकी में वाइल्ड लाइफ़ के महत्व के बारे में लोगों को बताया। डॉ० लाल सिंह, निदेशक- हिमालयन रिसर्च ग्रुप ने साइलेज बनाने की विधि पर शुष्क मौसम के लिये चारा बैंक प्रबंधन, साईलेज विधि द्वारा चारा संरक्षण, साइलेज बनाने की प्रक्रिया, उनसे होने वाले लाभ और साइलेज की गुणवत्ता प्रभावित करने वाले कारकों पर चर्चा की तथा साइलेज बनाने की विधि का चरण-दर-चरण प्रक्रिया का व्यवहारिक ज्ञान दिया। साईलेज बनाने हेतु 100 किलो हरा घास के लिए 2-3 किलो गुड़, 100 ग्राम नमक, तीन गुना पाँच फीट की हवा बंद (एयर टाइट) थैलियाँ की आवश्यकता होती है। हरे घास को छोटे छोटे टुकड़ों मे काट कर उसमे वर्णित सामाग्री का 8-10 लीटर पानी मे घोल बनाकर मिक्स किया जाता है और हवा बंद (एयर टाइट) बोरियों मे भरकर रखा जाता है। इस दौरान उन्होंने बताया कि साइलेज लगभग 45-60 दिन में बनकर तैयार हो जाता है तथा बनने के बाद पशु इसे बहुत पसंद करते हैं और यह सर्दियों में पशुओं हेतु चारे का एक पोष्टिक विकल्प है। इससे पशु के दूध कि गुणवत्ता एवं सेहत में सुधार होगा। 45 दिन से पहले साइलेज को पशुओं को नहीं देना चाहिए और पैकेट को एक बार खोलने के बाद 10-15 दिन में इसे प्रयोग कर लेना चाहिए। साइलेज बनाते हुए यूरिया के प्रयोग के बारे में बताया कि यूरिया के प्रयोग इसे लंबे समय तक सुरक्षित रखने में मदद करता है। तैयार

साइलेज को हवा बंद थैली में रखना आवश्यक है। इसे सर्दियों में चार से आठ किलो दुधारू पशुओं को खिलाया जा सकता है। डॉ० प्रवीन रावत ने चारा बैंक की स्थापना इसके महत्व एवं प्रबंधन पर वक्तव्य दिया। कार्यक्रम में रझाना पंचायत के बड़ागाँव, पट्टी, सलांज के 38 लोग शामिल हुये। रझाना पंचायत के उपप्रधान श्री मुकुन्द मोहन शांडिल ने इस महत्वपूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम को करवाने के लिए संस्थान का धन्यवाद किया। अंत में डॉ॰ जगदीश सिंह ने प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी को धन्यवाद दिया ।

कार्यक्रम की झलकियाँ

मीडिया कवरेज

ग्रामीणों को सिखाई हरे घास से साइलेज बनाने की विधि

शिमला, 4 अक्तूबर (भूपिन्द्र): पहाड़ी क्षेत्रों में सर्दियों के मौसम में हरा चारा किसानों को उपलब्ध नहीं होता है। ऐसे में हरे घास से साइलेज (हरा घास चारा) बनाया जा सकता है। यह चारा सर्दियों के मौसम में दुधारू पशुओं के लिए बहुत ही उपयोगी है।

यह जानकारी हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक डॉ. संदीप शर्मा ने बड़ागांव में ग्रामीणों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में कही। इस दौरान निदेशक हिमालयन रिसर्च ग्रुप डा. लाल सिंह ने साइलेज बनाने की प्रक्रिया, उनसे होने वाले लाभ और साइलेज की गुणवत्ता प्रभावित करने वाले कारकों पर चर्चा की तथा साइलेज बनाने की विधि का चरण-दर-चरण प्रक्रिया की व्यावहारिक जानकारी दी।

वैज्ञानिक डॉ. जगदीश सिंह ने बताया कि संस्थान ने इस वर्ष बड़ागांव के नजदीक ब्युल, कचनार, खिड़क एवं बान प्रजातियों के लगभग 800 पौधे रोपित कर चारा बैंक स्थापित किया है।

अब सर्दियों में पौष्टिक चारे की नहीं होगी कमी

संवाद न्यूज एजेंसी

शिमला। सर्दियों में हरे चारे की कमी को दूर करने के लिए हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (एचएफआरआई) बड़ागांव और जुन्गा में दो साल से ग्रामीणों को प्रशिक्षण दे रहा है। ग्रामीणों को साइलेज बनाने की प्रक्रिया सिखाई गई। इससे वे सर्दियों में भी पशुओं के लिए पोषक चारा खिला पाएंगे।

रझाना पंचायत के बड़ागांव, पट्टी और सलांज से 38 ग्रामीणों और जुन्गा के 40 ग्रामीणों को प्रशिक्षित किया गया है। इसके साथ ही हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने बड़ागांव के पास ब्यूल, कचनार, खड़क और बान के 800 से अधिक पौधे रोप कर चारा बैंक की स्थापना की है। यह चारा बैंक भविष्य में पशुपालकों को हरे चारे की आपूर्ति करेगा। रझाना पंचायत के उपप्रधान मुकुंद्र मोहन शांडिल ने कहा कि यह प्रशिक्षण ग्रामीणों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा।

साइलेज को अधिक समय तक सुरक्षित रखने के लिए यूरिया का प्रयोग भी किया जा सकता है। इसका एक साल तक उपयोग किया जा सकता है। साइलेज किसी भी बचे बचे हुए खाने, खेती के बाद बची चीजें जैसे मक्की के गंठल या बेलों का उपयोग करके बनाया जा सकता है। साइलेज में सूखी घास के मुकाबले कहीं ज्यादा पौष्टिक तत्व और फीड के मुकाबले कम रसायन होते हैं। यह पशुओं के स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है। साइलेज का उपयोग करने से दुधारू पशुओं के दूध की गुणवत्ता में सुधार होता है। इसे 4-8 किलो तक रोजाना खिलाया जा सकता है।

यह है विधि : 100 किलो हरे चारे के लिए लगभग 2-3 किलो गुड़, 50 ग्राम नमक और एयरटाइट थैलियों की आवश्यकता होती है। हरा चारा छोटे-छोटे टुकड़ों में काटा जाता है। इसमें पानी में घुले हुए गुड़ और नमक का मिश्रण मिलाया जाता है। इसके बाद इस मिश्रण को एयरटाइट थैलियों में बंद कर दिया जाता है। यह प्रक्रिया 45-60 दिनों में पूरी होती है और सर्दियों में यह पशुओं के लिए पौष्टिक चारा बन जाता है।

ग्रामीणों को साइलेज बनाना सिखाते एचएफआरआई के वैज्ञानिक। संवाद

"साइलेज दुधारू पशुओं के लिए बेहतरीन आहार है। इसे हरे चारे से तैयार किया जाता है। इसे लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है। प्रशिक्षण का उद्देश्य ग्रामीणों को चारा बैंक का महत्व समझाना और साइलेज बनाने की व्यावहारिक विधि की जानकारी देना है ताकि सर्दियों में भी पशुओं को पौष्टिक चारा मिल सके।

डॉ. संदीप शर्मा, निदेशक, एचएफआरआई

****